हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-VII (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)-HL-**HL7**

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Ravi Kumar Sihag

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 07 21/08/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	3	9	4	6	9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Ravi Sihag

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained):

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमजोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेज़ों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) नैनाँ अंतरि आचरूँ, निस दिन निरषौं तोहिं।
कब हरि दरसन देहुगे, सा दिन आवै मोंहि।।

प्रस्तुत पंक्तियाँ पं. श्यामसुंदर दास के कबीर की सूक्तियों के संकलन 'कबीर ग्रंथावली' से उद्धृत हैं। इस ग्रन्थ के खण्ड 'विरह के अंग' में यह दोहा स्थित है।

प्रस्तुत पंक्तियों में कबीर ईश्वर के बिना मन की विरहदशा का वर्णन अत्यन्त मार्मिक रूप से करते हैं।

व्याख्या :- कबीर कहते हैं कि हे प्रभु! आपके आगमन के मार्ग को निहारते-निहारते मेरी आँखे अंदर की ओर धंसती जा रही हैं। आपके विरह में मेरे नेत्रों की दशा अत्यन्त व्यथित हो गई है। आप मुझे कब अपना दर्शन प्रदान कर मेरा उद्धार करेंगे क्योंकि कहीं विरह

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में मेरा अन्त समय ही न आ जाये।
पंक्तियों में कबीर चाहते हैं कि उनके जीवन में एक बार उन्हें हरि-दर्शन हो जायें तो उनके नेत्र तृप्त हो जायें।

विशेष :- विरह की दशा अत्यन्त मार्मिक है।

- एक जगह कबीर ने कहा भी है-
अँखड़ियाँ झाईं पड़ी, पंथ निहारि-निहारि।

- अन्य स्थान पर दर्शन देने में हो रही देरी पर कबीर की पंक्तियाँ हैं-
"मुवाँ पीछे देहोगे, सो दर्शन किहि काम"

- भाषा में अनेक भाषाओं के मिश्रण का अद्भुत समावेश है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) फागुन पवन झकोरा बहा। चौगुन सीउ जाइ नहिं सहा।।
तन जस पियर पात भा मोरा। तेहि पर बिरह देइ झकझोरा।।
तरिवर झरहि झरहि बन ढाखा। भइ ओनंत फूलि फरि साखा।
करहिं बनसपति हिये हुलासू। सो कहँ भा जग दून उदासू।।
फागु करहिं सब चाँचरि जोरी। मोहि तन लाइ दीन्ह जस होरी।।
जौ पै पीउ जरत अस पावा। जरत-मरत मोहि रोष न आवा।।
राति-दिवस बस यह जिउ मोरे। लगौं निहोर कंत अब तोरे।।
यह तन जारौं छार कै, कहौं कि 'पवन! उड़ाव'।
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाव।।

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'भक्तिकाल' के प्रसिद्ध सूफी भक्तकवि 'मलिक मोहम्मद जायसी' की रचना 'पद्मावत' से उद्धृत है।

प्रस्तुत पंक्तियों में 'पद्मावत' के 'नागमती-वियोग' खंड में से नागमती की विरह दशा एवं पति के प्रति समर्पण-भाव का मार्मिक वर्णन किया गया है।

व्याख्या :- फाल्गुन के महीने में पवन बह रही है परन्तु नागमती के प्रिय अर्थात् रत्नसेन के आने की कोई संभावना नहीं है। प्रिय के वियोग में तो उसका तन जल रहा है। विरह उसके संपूर्ण तन को झकझोर रहा है। सम्पूर्ण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वनस्पति को देखकर भी नागमती की उदासी जा नहीं रही क्योंकि उसके प्रिय उसके साथ नहीं है। रात-दिन वह बस केवल अपने प्रिय की ही प्रतीक्षा करती है। वह हवा से कहती है कि मेरे तन को जलाकर उसकी राख उस मार्ग पर बिछा देना, जिस पर मेरे प्रिय पाँव रखेंगे।

विशेष :-
(i) शुक्ल जी के अनुसार- "नागमती वियोग हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु है।" हालाँकि इस पर नारी चिंतकों के आक्षेप भी लगते हैं।
(ii) लोक तत्वों की सघन उपस्थिति दिखाई पड़ती है।
(iii) अवधी भाषा की बेमेल, खालिस मिठास की अनुभूति होती है।
(iv) अंतिम दो पंक्तियों में अतिशयोक्ति अलंकार दिखाई पड़ता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) दिनकर का मानवतावादी दर्शन कुरुक्षेत्र में किस रूप में अभिव्यक्त हुआ है? प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'मानवतावाद' आधुनिक युग में विकसित हुई वह चिंतनधारा है जो संघर्ष जगत के केन्द्र में ईश्वर या परलौकिक वस्तु को न रखकर 'मानव' को रखती है एवं समस्त क्रियाओं, कार्यों का मानव के कल्याण के सापेक्ष तौलती है।

दिनकर पर भी मानववाद का गहरा प्रभाव पड़ा है परन्तु उनका मानवाद सार्त्र, कीर्केगार्द की तरह 'व्यक्ति' पर निर्भर न होकर गांधी, जवाहर लाल नेहरू एवं मार्क्स की तरह 'समाजवादी मानववाद' है। कुरुक्षेत्र में भी अपनी मानववादी विचारधाराओं के उद्घाटन उन्होंने पूर्ण रूप से किया है, जिन्हें निम्न रूपों में देखा जा सकता है-

(क) परलोक में विश्वास :- दिनकर के काव्य में भीष्म युधिष्ठिर को इहलौकवाद का ज्ञान देकर कहते हैं कि मानव को अपना संपूर्ण कार्य इसी लोक के कल्याण हेतु

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करना चाहिये -

"ऊपर सब कुछ शून्य-शून्य
कुछ भी नहीं गगन में
धर्मराज जो कुछ भी है
इस मिट्टी के जीवन में।"

(ख) मानव के पुरुषार्थ में विश्वास :- भीष्म मानव को कर्म एवं पुरुषार्थ का संदेश देकर जगत के प्रमुख कर्त्ता-धर्त्ता के रूप में स्थापित करते हैं-

"जीवन उनका नहीं युधिष्ठिर, जो उससे डरते हैं
बल्कि उनका जो चरण रोप, निर्भय होकर लड़ते हैं"

(ग) मानवीय प्रेम को भीष्म की प्रतिज्ञा के ऊपर वरीयता देकर दिनकर ने एक अन्य उद्भावना स्थापित कर दी है जो जीवन की सहजता का प्रमाण है -

"नहीं था ज्ञान मुझे कम से, स्नेह श्रेष्ठ सुंदर है"
कोमलता की लौ व्रत के, आलोकों से बढ़कर है"

(घ) विज्ञान पर बल :- कुरुक्षेत्र आधुनिक कवि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एवं मार्क्सवाद में विश्वास रखने के बाद विज्ञान पर भरोसा करते हैं। साथ ही 'ब्राण्ड्रेड रसल' के प्रभाव से वे तकनीक को तटस्थ बताकर इसका इस्तेमाल विवेकपूर्ण तरीके से करने पर बल देते हैं-

- "इस मनुज के हाथ से विज्ञान के भी कूल वज्र होकर छूटते शुभ कर्म अपना भूल"

- "सावधान मनुष्य यदि विज्ञान है तलवार तो फेंक दे इसे तजकर मोह स्मृति के पार।"

(घ) मानव मात्र के लिये समानता की उद्भावना

कुरुक्षेत्र में दिनकर ने मार्क्स से प्रभावित होकर युद्ध का मूल कारण 'वितरणमूलक अन्याय' को बताया है। उनके अनुसार यदि युद्ध रूपी समस्या का पूर्ण निदान करना है तो समानता एकमात्र विकल्प है-

"जब तक मनुज-मनुज का
यह सुख भाग नहीं सम होगा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

शमित न होगा कोलाहल
संघर्ष नहीं कम होगा।"

अन्ततः दिनकर ने मानव की उन्नति की सुंदर संभावना के साथ काव्य का अंत किया है। उनके अनुसार मानव में उन्नति की अपार ~~क्षमता~~ क्षमता विद्यमान है और मानव जीवन सदैव ~~उन्न~~ उन्नति पथ पर ही आसीन होगा

"कुरुक्षेत्र की धूलि नहीं पथ नहीं
मानव ऊपर और चलेगा।"

इस प्रकार दिनकर ने अपनी मानवतावादी उद्भावनाएं कुरुक्षेत्र में प्रस्तुत की है जो कि इसे एक आधुनिक काव्य सिद्ध करती हैं।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नागमती के विरह-वर्णन को मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण कहना कहाँ तक उचित है? अपना मत प्रस्तुत कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जायसी के 'पद्मावत' पर विचार करते हैं तो इसमें विरह के वर्णन तीन-चार जगह पर है। यहाँ विरह रत्नसेन को भी हुआ है, पद्मावती को भी तो नागमती को भी। परन्तु यदि विरह की गहराई एवं मार्मिक अभिव्यंजना की नज़र से देखें तो पाते हैं कि नागमती का वर्णन आचार्य ~~शुक्ल~~ शुक्ल के शब्दों में "हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु है"

नागमती वियोग वर्णन में विद्यमान साधारणीकरण अर्थात, नागमती का रानी के रूप में न होकर साधारण नारी के रूप में विरहानुभव करना, आत्मविस्तार, बलिदान की भावना जैसे तत्वों के कारण शुक्ल जी को कहना पड़ा-

"यह आशिक, माशूकों का निर्लज्ज प्रलाप नहीं है। यह हिंदी सहिणी की विरहवाणी है जिसका सात्विक मर्यादापूर्ण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रूप परम मनोहर है।"

परन्तु आज के नारी विमर्श एवं अन्य आधुनिक लेखकों को मध्यकालीन नारी की दासता एवं लिंगभेद नज़र आता है। उनके अनुसार इसे सांस्कृतिक या धार्मिक चश्मे से देखना मध्ययुगीन नारी की पीड़ा को अनदेखा करने के समान है।

मध्ययुग में नारी की स्थिति सामंती वातावरण के कारण चिंताजनक रही है। प्रगतिशील भक्तिकालीन कवियों के यहाँ भी नारी के संबंध में निराशा ही हाथ लगती है। प्रसंग चाहे कबीर का - 'नारि की झाईं पड़त अंधा होत भुजंग' का हो या तुलसी का - 'नारि हानि बिसेष क्षति नाहिं' हो, हर जगह नारि को द्वितीय वस्तु के रूप में परिभाषित किया गया है। पद्मावत में भी यही भाव व्यंजित हुआ है -

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(क) दूरी को रत्नसेन को भी महसूस होनी चाहिये किन्तु पुरुष होने के नाते उसके पास विकल्प मौजूद हैं।

(ख) रानी बनने पर भी नागमती का वियोग सिद्ध करता है कि आर्थिक दशाएँ भी नारी की स्थिति में सुधार नहीं करती।

(ग) नारी की स्थिति का आलम यह है कि अन्त में वह अपनी राख के द्वारा अपने पति के ~~पर~~ मार्ग को कोमल बनाना चाहती है- ['यह तन जारौं छार कै'] परन्तु रत्नसेन को इसकी कोई ~~प्रवा~~ परवाह नहीं है। पृथ्वीराज चौहान का 14 विवाह करना या रत्नसेन का दूसरा विवाह करना - नारी की स्थिति व दुर्दशा को ही व्यंजित करते हैं।

वस्तुतः कहा जा सकता है कि ये मत भी उपेक्षित नहीं है। आधुनिक नज़रिये से देखने पर नारी की दासता व दुर्दशा का आभास हो सकता है परन्तु जायसी का विरह वर्णन अपने साधारणीकरण, मार्मिकता के गुणों के कारण अद्वितीय वस्तु भी बन पड़ा है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) बिहारी की समाहार-शक्ति का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी के काव्य की प्रमुख विशेषताओं एवं उपलब्धियों की बात करें तो एक कारण प्रमुखता से नज़र आता है - वह है बिहारी की 'समाहार क्षमता'।

इस क्षमता से तात्पर्य है कि अपने जीवन के विभिन्न अनुभवों, चित्रों, दृश्यों, कल्पनाओं को जोड़ने की क्षमता। 'एस. टी. कोलरिज' के शब्दों में कहें तो बिहारी 'फैन्सी' नहीं करते बल्कि 'इमेजीनेशन' करते हैं अर्थात् अपने जीवन के विभिन्न अनुभवों, धरनाओं चित्रों को सावयवी एकता में जोड़ देते हैं।

यदि समाहार-शक्ति का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण देखना हो तो एक दोहा ऐसा है जिसमें उन्होंने अपने जीवन के विभिन्न दृश्यों को अपनी 'कल्पना-शक्ति' से जोड़कर गुंथ दिया है। जिस कारण

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दोहा एक चलचित्र देखने जैसा नज़ारा पेश कर देता है -

"कहत, नटत, रीझत, खीजत, मिलत, खिलत, लजियात,
भरे भौन में करत है, नैनन ही सों बात"

यदि समाहार क्षमता पर चर्चा करें तो हिन्दी साहित्य की 1000 वर्षों की परंपरा में बिहारी जैसा कवि नहीं मिलता। उनकी इस क्षमता की तुलना सूरदास निराला से की जा सकती है, परन्तु भावों एवं दृश्यों को जोड़ने की क्षमता में वे इन पर भी भारी पड़ते हैं। एक दोहे में इन्होंने राधा-कृष्ण के बीच की नोंक-झोंक एवं तकरार के दृश्यों को एक ही दोहे में बहुत सुंदर तरीके से जोड़ा है।

"बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय
सौंह करे, भौंहनु हँसे, दैन कहे, नट जाय"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रश्न विदेशी की समाहार क्षमता उन्हें अन्य हिन्दी के कवियों से अलग कतार में खड़ा करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) बिहारी की समाज-चेतना पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी के काव्य पर प्राय यह आक्षेप लगता रहता है कि यह काव्य दरबार 'में' रचा गया दरबार 'के लिये' ही काव्य है। उनकी लगभग हर सुक्ति में दैहिक भोग-विलास, सामंती विलास, संयोग शृंगार जैसे तत्वों का समावेश होता रहता है।

परन्तु आधुनिक कुछ कवि बिहारी के दोहों के पुनर्मूल्यांकन की मांग करते हैं। उनका कहना है कि बिहारी एक सामंती कवि होने पर भी उनके काव्य में सामाजिक चेतना नदारद नहीं है। कुछ उदाहरणों द्वारा समझा जा सकता है।

बिहारी के काव्य में 'राजनैतिक चेतना' विद्यमान है। आश्चर्य की बात है कि दरबारी कवि होने पर भी वे अपनी कलम दरबार के लिये गिरवी नहीं रखते। जयपुर के राजा जयसिंह के एक युवती के प्रेम में पड़कर राजकर्म भूलने पर बिहारी का लिखा गया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दोहा इसी बात की पुष्टि करता है -

"नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल
अलि कलि ही सों बंध्यो, आगे कौन हवाल"

इसी प्रकार मुगल बादशाह के कहने पर अपने राजा द्वारा अन्य पड़ोसी राजाओं पर आक्रमण करने को भी बिहारी उचित नहीं मानते -

"स्वारथ सुकृत न श्रमु वृथा, देखि विहंग विचारि।
बाज पराये पानि परि, तूँ पच्छीनु न मारि।"

बिहारी की सामाजिक चेतना का दूसरा पक्ष पारिवारिक स्तर पर दिखाई पड़ता है जब वे एक देवर द्वारा बुरी आँख रखे जाने पर एक स्त्री की करुण दशा का वर्णन करते हैं

"कहति न देवर की कुमति, कुलतिय कलह लजाति,
पंजर गत मंजार ढिग, सुक लौं सूखति जाति।"

इसी प्रकर धार्मिक आडंबरों पर भी बिहारी के द्वारा दोहे रचे जाना उनकी

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सामाजिक चेतना को प्रदर्शित करता है।
एक पाखंडी साधु की स्थिति का वर्णन उन्होंने इस प्रकार किया है—
"जपमाला छापा तिलक, सरै न एको काम
मन कांचे नाचे वृथा, सांचे रांचे राम।"

एक अन्य स्थान पर बिहारी ने धार्मिक अंधविश्वासों पर व्यंग्यात्मक रूप में चोट की है -
"चितु पितुमारक जोग गुनि, भयो भये सुत सोक
फिर हुलस्यो जिय जोइसी, समुझि जारज जोग।"

इस प्रकार उपर्युक्त प्रसंगों में बिहारी ने साबित किया है कि उनके काव्य में सामाजिक चेतना अनुपस्थित नहीं है।
परन्तु, हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि बिहारी मूलतः नागर कवि हैं और वे ग्रामीण समाज का मजाक उड़ाते हैं। साथ ही उनकी कविता के उद्देश्य की घोषणा भी वे निम्न

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शब्दों में करते हैं-
"तंत्रीनाद कवित्त रस, सरस राग रतिरंग
अनबूडे बूडे तिरे, जे बूडे सब अंग।"

अतः सामाजिक चेतना व्यापक रूप में उपस्थित नहीं है, परन्तु अनुपस्थित भी नहीं है। शायद दरबारी परिवेश के दबावों के कारण इतना ही सम्भव हुआ होगा। फिर भी जहाँ मौका मिला है उन्होंने सामाजिक विषयों पर भी कलम चलाई है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कुरुक्षेत्र के काव्यरूप पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'कुरुक्षेत्र' आधुनिक युग के राष्ट्रकवि 'रामधारी सिंह दिनकर' द्वारा रचित एक आधुनिक युग के मानवतावादी मूल्यों युक्त काव्य है। इसमें दिनकर का नवीनतम दृष्टिकोण एवं व्यक्तित्व इस काव्य के काव्यरूप के निर्धारण में भी प्रश्न पैदा करता है।

वस्तुतः यह रचना दिनकर ने प्रबंध शैली में नहीं लिखी। दिनकर के अनुसार यदि वे भीष्म व युधिष्ठिर के वार्तालाप को ही दिखाते तो संभवतः यह मुक्तक बनकर रह जाती किन्तु साथ ही उन्होंने यह स्वीकार भी किया है कि उनका प्रबंधन लिखने का कोई इरादा नहीं था। उनके अनुसार - "वे इस कविता को लिखते समय सोचते ही रहे हैं।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन सभी प्रसंगों के कारण कुरुक्षेत्र के काव्यरूप निर्धारण में समस्या आती है। वस्तुतः इसे 'मुक्तक' नहीं कहा जा सकता क्योंकि भीष्म एवं युधिष्ठिर के वार्तालाप एवं महाभारत के शांतिपर्व की पौराणिक कथा पर आधारित होने के कारण एक अदृश्य कथा का प्रवाह बना ही रहता है। सूरदास के पदों को जिस प्रकार पूर्णतः मुक्तक न मानकर 'लीलापद' कहा जाता है, इसी प्रकार कुरुक्षेत्र कविता को भी प्रबंध का दर्जा देना चाहिये।

दूसरा प्रश्न यह है कि क्या कुरुक्षेत्र महाकाव्य है? दिनकर ने इसमें 'युद्ध की समस्या' का ही विवेचन किया है उन्होंने कहा कि "... कलिंग विजय लिखते समय मुझे महसूस हुआ कि युद्ध ही मनुष्य की समस्त समस्याओं की जड़ है"

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परन्तु तटस्थ विश्लेषण करने पर युद्ध की समस्या उतनी बड़ी समस्या नज़र नहीं आती। साथ ही, महाकाव्य में मौजूद औचित्यमूलक प्रभाव भी प्रकट नहीं होता। इसके साथ-साथ छठा अंक भी क्षेपक की भाँति जोड़ा हुआ नज़र आता है।

अंततः गहन विश्लेषण करने पर इसे 'खण्डकाव्य' या 'लंबी कविता' माना जा सकता है। इनमें से भी 'लंबी कविता' ज़्यादा उपर्युक्त प्रतीत होता है और यह लंबी कविता भी निराला की 'सरोज-स्मृति' या 'राम की शक्तिपूजा' की तरह प्रगीतात्मक या 'प्रबंधात्मक लंबी कविता' न होकर 'विचार प्रधान लंबी कविता' है। डॉ० नगेन्द्र के शब्दों में कहें तो 'चिन्तन प्रधान लंबी कविता'।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जायसी और कबीर के रहस्यवाद की तुलना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

आचार्य शुक्ल ने अपनी पुस्तक 'जायसी ग्रंथावली की भूमिका' में एक स्थान पर कबीर और जायसी के रहस्यवाद की तुलना की है। इस पुस्तक में उन्होंने जायसी के रहस्यवाद को भावनाओं से आर्द्र बताया है तो कबीर के रहस्यवाद को शुष्क। उनके अनुसार

"कबीर में वाकचातुर्य था, प्रतिभा भी परन्तु संपूर्ण प्रकृति के भ्रम में हर एक वस्तु को देख लेने की भावुकता नहीं थी ×××× यदि कहीं हिन्दी में रमणीय, सुंदर एवं अद्वैती रहस्यवाद है तो वह जायसी का है, जिसकी भावुकता अत्यन्त उच्च कोटि की है।"

सापेक्ष तुलना करने पर हम पाते हैं कि यदि कबीर के रचनाकाल के प्रारंभिक समय की बात करें तो कबीर पर साधनात्मक रहस्यवाद का प्रभाव दिखाई पड़ता है,

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जो कि हठयोग आधारित है। जैसे -

"अवधू गगनमंडल घर कीजै
अमृत झरै, सदा सुख उपजै
बंकनाली रस पीजै।"

इसके अलावा उनकी उलटबाँसियाँ भी इसी रहस्यवादी परंपरा पर आधारित है "नैया बिच नदिया डूबती जाय।"

परंतु यदि जायसी के रहस्यवाद पर चर्चा करें तो हम पाते हैं कि जायसी का रहस्यवाद सूफियों से प्रेरित 'भावनात्मक रहस्यवाद' है जिसमें साधक अपने को खुदा में डूबा देना चाहता है साथ ही सम्पूर्ण सृष्टि एवं उसके प्राणियों को ईश्वर की ही अभिव्यक्ति मानता है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है कि जिस दिन पद्मावती की मुस्कुराहट दिखी तो 'बहुत जोति जोति ओहि भई' साथ ही इसी मुस्कान से-

"रवि ससि नखत दीपहिं ओहि जोति, रतन पदारथ मानक मोती।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परन्तु इस चर्चा का एक पक्ष वहाँ शुक्ल होता है जहाँ हम कबीर की अनुवर्ती परवर्ती काल की कविताओं पर विचार करते हैं। एक दोहे में तो उन्होंने सम्पूर्ण जगत को ब्रह्म का अंग माना है-

"लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल
लाली देखन मैं चली, मैं भी हो गई लाल।"

साथ ही 'तलफै बिन बालम मोर जिया' जैसी पंक्तियों में जो तड़प है उनमें भी भावनात्मक रहस्यवाद का प्रभाव दिखलाई पड़ता है। साथ ही जायसी ने भी एक स्थान पर खुदा को अपने अन्दर ही माना है।

इस प्रकार कालवश भिन्नता के बावजूद दोनों में काफी समानताएँ भी हैं तो कबीर के परिवर्तनशील रचनाकाल के कारण भिन्नता तो दिखाई पड़ती है ही।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) करते हुए उसके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है। जब पूज्यभाव की वृद्धि के साथ श्रद्धाभाजन के सामीप्य-लाभ की प्रवृत्ति हो, उसकी सत्ता के कई रूपों के साक्षात्कार की वासना हो, तब हृदय में भक्ति का प्रादुर्भाव समझना चाहिये। जब श्रद्धेय के दर्शन, श्रवण, कीर्तन, ध्यान आदि से आनन्द का अनुभव होने लगे–जब उससे सम्बन्ध रखने वाले श्रद्धा के विषयों के अतिरिक्त बातों की ओर भी मन आकर्षित होने लगे, तब भक्ति रस का संचार समझना चाहिये।

प्रस्तुत पंक्तियाँ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की पुस्तक 'चिंतामणि' के मनोविकारपरक निबंध 'श्रद्धा-भक्ति' ली गई गई हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों में शुक्ल जी ने भक्ति की उद्भावना एवं प्रेम व भक्ति के अन्तर को स्थापित किया है।

व्याख्या :- शुक्ल जी कहते हैं कि श्रद्धा में आनंद भाव होता है परन्तु श्रद्धेय से दूरी बनी रहती है। किन्तु, यदि श्रद्धा के साथ प्रेम का मिलन हो जाये और इसके परिणामस्वरूप श्रद्धेय से साक्षात्कार एवं मिलन की उत्कंठा भी उद्वेलित करने लगे तो इस दशा को भक्ति की दशा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कहते हैं। भक्ति की अवस्था में श्रद्धेय के गुणों के अतिरिक्त उसके निजी जीवन आदि के बारे में जानने की इच्छा उत्पन्न होने लगती है।

विशेष :-
(क) मनोविकारों पर शुक्ल जी की समझ उनके चिंतन की गहराई को व्यक्त करती है। उनकी ये सूक्ष्मताएँ पश्चिमी मनोवैज्ञानिकों फ्रायड, मैक्डुगल की परिभाषाओं से भी सुसंगत हैं।

(ख) सूत्र वाक्य का प्रयोग
"श्रद्धा एवं प्रेम के योग का नाम भक्ति है।"

(ग) विचारों की गूढ़ गुंफित परंपरा दर्शनीय है। चिंतन की सूक्ष्मता के साथ-साथ वैज्ञानिक शैली में 'एक-एक पैरा में विचार दबा-दबाकर कसे' गये हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) तुम्हें पता था मैं भीग जाऊँगी। और मैं जानती थी तुम चिन्तित होगी। परन्तु माँ...
...मुझे भीगने का तनिक खेद नहीं। भीगती नहीं तो आज मैं वंचित रह जाती।
चारों ओर धुआँरे मेघ घिर आये थे। मैं जानती थी वर्षा होगी। फिर भी मैं घाटी की पगडंडी पर नीचे-नीचे उतरती गयी।
एक बार मेरा अंशुक भी हवा ने उड़ा दिया। फिर बूँदें पड़ने लगीं। वस्त्र बदल लूँ, फिर आकर तुम्हें बताती हूँ। वह बहुत अद्भुत अनुभव था माँ, बहुत अद्भुत।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी नाटकों के शिखर पुरुष मोहन राकेश' के प्रथम नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से ली गई हैं।

इन पंक्तियों में कालिदास के साथ आषाढ़ के मेघों के ~~क्यों~~ वर्षा में भीगने के बाद मल्लिका के घर पहुँचकर अपनी मां के साथ वार्तालाप का दृश्य है।

व्याख्या → मल्लिका की मां अम्बिका को मल्लिका का कालिदास के साथ क्रीड़ा करना उचित नहीं लगता क्योंकि वह जीवन व प्रेम की सच्चाई समझती है। इसी कारण मल्लिका आषाढ़ के मेघों की व वर्षा के भीगने के आनंद को उठाकर अपनी मां को सफाई देती है कि वह किस प्रकार का मनोहारी एवं अद्भुत अनुभव

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

था। मल्लिका इन मेघों में भीगने के आनंद को खोना नहीं चाहती। साथ ही वह अपनी मां को समझाने का भी प्रयत्न कर रही है।

विशेष :- मल्लिका के चरित्र की स्वच्छंदता का आभास होता है। एक स्थान पर मल्लिका का कथन है —

"उन्हें कोई अधिकार नहीं है कुछ भी कहने का, मल्लिका का जीवन उसकी अपनी संपत्ति है।"

= भाषा के स्तर पर राकेश जी का कौशल देखते ही बनता है। ऐतिहासिक आवरण होने पर भी भाषा आतंक पैदा नहीं करती, सहज एवं बोधगम्य है।

= आषाढ़ के मेघों की वर्षा नाटक के कथानक निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) शहरी जीवन के चित्रण में अधिक सफलता न मिलने के बावजूद प्रेमचंद द्वारा गोदान में शहरी कथा के समावेश के क्या कारण हो सकते हैं? युक्तियुक्त उत्तर लिखिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपने अंतिम, कालजयी एवं महाकाव्यात्मक उपन्यास 'गोदान' में प्रेमचन्द ने अपने युग की समस्त समस्याओं को एक पुस्तक में उतार दिया है। कुछ विद्वानों के अनुसार गोदान एक महासागर है जिसमें प्रेमचन्द की पूर्ववर्ती समस्त कहानियों एवं उपन्यासों का जल आकर मिला है।

सभी स्थानों, समस्याओं के वर्णन के कारण प्रेमचन्द ने शहरी जीवन को भी अपनी उपन्यास कथा सेत्र में जगह प्रदान की है, परन्तु कुछ विद्वानों ने आक्षेप लगाया है कि प्रेमचन्द ने ग्रामीण कथा का तो बेहतर चित्रण किया है परन्तु शहरी कथा के चित्रण में 'उनका मन रमा नहीं है', साथ ही दोनों कथाओं को जोड़ने में भी परिपक्वता नहीं आ पाई है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वस्तुनिष्ठ विश्लेषण करने पर राष्ट्रीय कथा को कम महत्व प्रदान करने तत्कालीन भारतीय स्थितियों के संबंध में प्रेमचन्द की रणनीति ही प्रतीत होती है क्योंकि उस समय ग्रामीण-शहरी संबंध थे भी कम।

इस प्रकार राष्ट्रीय कथा लीन के औचित्य के पीछे भी निम्न कारण गिनाये जा सकते हैं -

(क) प्रेमचन्द अपने युग में विद्यमान शोषण को पूर्णतः उजागर करना चाहते थे। किसानों के शोषक जमींदार शहरों में ही रहते थे। उदा० के लिये रायसाहब का ग्रामीण जीवन से कम जुड़ाव व शहर में रहना। लोकतंत्र पर व्यंग्य करना एवं पत्रकारिता का विकास होना भी वस्तुतः इसी रणनीति के अंग प्रतीत होते हैं।

(ख) प्रेमचन्द अपने युग के संक्रमण की पीड़ा को दर्शाना चाहते थे। क्यों कि तत्कालीन सामंतवादी ढांचे के जर्जर होने पर पूंजीवाद

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के धीरे - धीरे स्थापित होने के कारण जो पीढ़ी - संघर्ष एवं अन्य समस्याएँ पैदा हो रही थी, उनका विस्तृत चित्रण शहरी कथा को सम्मिलित किये बगैर नहीं हो सकता था। उदाहरण के लिये गोबर - होरी संवाद।

(ग) प्रेमचन्द ने मजदूरों की दयनीय स्थिति के चित्रण के लिये भी शहरी कथा का सहारा लिया है। गोदान में जो फैक्ट्री है और जिसमें मजदूरों में आत्मनिर्वासन विद्यमान है, वह शहर में ही स्थित है।

(घ) शहरी पात्रों का प्रयोग प्रेमचन्द ने अपने आदर्शों के प्रक्षेपण हेतु भी किया है जैसे - मालती (आध्यात्मिक पक्ष), मेहता (मानवीय विचार), ~~मालती~~ मि. खन्ना (हृदय परिवर्तन) आदि।

(ङ) प्रेमचन्द ने महाजनी व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर करने के साथ - साथ तत्कालीन स्वतंत्रता संग्राम के वर्गीय चरित्र को बेनकाब करने हेतु

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी शहरी कथा को लिया है-
"मिस्टर खन्ना भी साहसी आदमी थे, संग्राम में आगे बढ़ने वाले xxxx खद्दर न पहनते थे व फ्रांस की शराब पीते थे।"

(घ) अन्तत! प्रेमचन्द की मंशा उपन्यास को महाकाव्यात्मक बनाने की भी प्रतीत होती है और शहरी कथा के बिना ऐसा संभव न हो पाता।

इस प्रकार शहरी कथा को लेने के पर्याप्त औचित्य हैं जिनके आधार पर कहा जा सकता है प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास के प्रतिपाद्य में पूर्णता प्रदान करने हेतु शहरी कथा को लिया है एवं इसमें वे बहुत हद तक सफल भी हुए हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नई कहानी की विशेषताओं के आलोक में कमलेश्वर की कहानी 'खोई हुई दिशाएँ' का विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नई कहानियों के प्रतिनिधि कहानीकारों पर बात करें तो इनमें 'मोहन राकेश', 'कमलेश्वर' एवं 'राजेन्द्र यादव' के नाम आते हैं। चूंकि कमलेश्वर इस धारा के शिखर पुरुषों में एक हैं अतः उनकी कहानियों में नई कहानी की विशेषताएँ व्यंजित होंगी ही। 'खोई हुई दिशाएँ' भी इसका अपवाद नहीं है।

संवेदना के स्तर पर नई कहानी में शहरीकरण, मशीनीकरण, आजादी के मोहभंग के कारण बदलते संबंध, स्त्री-पुरुष तनाव, आत्मनिर्वासन, विसंगति बोध, शहरी जीवन की विसंगतियाँ, संत्रास आदि विषय आते हैं।

खोई हुई 'दिशाओं' में भी मूल समस्या 'पहचान की समस्या' है। चन्दर इलाहाबाद से दिल्ली आता है, मगर यहाँ उसे कोई

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नहीं जानता

"आसपास से सैकड़ों लोग गुजरते हैं
पर कोई उसे नहीं पहचानता।"

इन्हीं परिस्थितियों में उसकी एक ही मांग है-
"मुझे अब और कुछ भी नहीं चाहिये,
बस परिचय की एक मांग है।"

शहरी जीवन के दबावों में उसकी प्रेमिका इंदिरा में आया परिवर्तन, आनंद के ऊपरी मीठे व्यवहार के भीतर छिपा दोगलापन, भीड़ में अकेलेपन की स्थिति, बस कंडक्टर का अजनबी भरा व्यवहार करना शहरी जीवन की योगिकता का अनूठा उदाहरण पेश करते हैं। चन्दर को तो शहरी माताओं में भी अपनी संतानों के प्रति वात्सल्य नज़र नहीं आता। वह सोचता है-

"यहाँ एक विरी ललकार है, एक बहुत बेयानी है जिसे न तो नकारा जा सकता है न ही स्वीकार किया जा सकता है।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शिल्प के स्तर पर भी कहानी में कथानक टूटा हुआ है। यहाँ कोई आदि-अन्त नहीं है।

कहानी के सभी पात्र भी स्थितियों से चालित प्रतीत होते हैं। इंदिरा का शहर आकर बदल जाना शहरी जीवन के दबावों से ही प्रेरित है।

भाषा के स्तर पर चरित्रानुकूल भाषा-

'प्लीज, इफ यू डॉन्ट माइंड ; कुछ पैसे हैं?' (आनंद)

'अभी तो है आन तो घट नहीं लेदे, बादशाहो' (कंडक्टर की भाषा)

उपमाओं का प्रयोग -

"बत्तियों की आँखे लाल पीली हो रही थी।"

विरोधाभास की भाषा :

"यह राजधानी है जहाँ सब अपना है, अपने देश का है ××× पर कुछ भी अपना नहीं है।"

इस प्रकार भोगे हुए यथार्थ की संवेदना एवं शिल्पगत बारीकियों के स्तर पर यह नई कहानियों की विशेषताओं को पूर्णतः छूती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'यही सच है' कहानी की शिल्प-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'यही सच है' मन्नु भंडारी द्वारा रचित कहानी है और यह कहानी राजेन्द्र यादव के संकलन 'एक दुनिया : समानान्तर' की बेहतरीन कहानियों में शुमार है। कहानी की संवेदना में व्यक्ति के अन्तर्मन की उथल-पुथल के साथ शिल्पगत स्तर पर भी कहानी विशेष स्थिति धारण करती है।

कहानी के शिल्प की प्रथम विशेषता इसका 'डायरी शैली' में लिखा जाना है। इस शैली में लिखे जाने का लाभ यह है कि लिखने वाला पात्र अपने मन के सभी भावों को ईमानदारी से बयाँ कर देता है। डायरी में समयानुसार इलाहाबाद से कलकत्ता आदि की यात्रा के खण्डों से पढ़ने में भी सहूलियत हुई है।

परन्तु इस शैली की एक सीमा यह है कि केवल लिखने वाले पात्र (दीपा)

के अन्तर्मन की तहें खुली हैं। अन्य पात्रों जैसे - संजय, निशीथ के चरित्रों का पूर्ण उद्घाटन नहीं हो पाया है।

कथानक के स्तर पर कहानी 'नई ~~विशेषताओं~~ कहानी' के अनुरूप ~~कहा~~ कथानक विहीनता जैसी स्थिति को लेकर चलती है। कहानी का आदि, मध्य, अन्त में विभाजित न होना इसी बात का द्योतक है।

इसके अलावा दीपा की स्मृतियों के वर्णन में पूर्वदीप्ति शैली, प्रत्यावलोकन शैलियों का भी प्रयोग किया गया है।

चरित्रों के स्तर पर यह कहानी अद्भुत परिपक्वता को धारण करती है। दीपा के चरित्र के चेतन - अवचेतन मन के संघर्ष ने साबित किया है कि कितना भी गहरा प्रेम हो, विचलनहीन नहीं होता। इसी प्रकार का संघर्ष 'कृष्ण बलदेव वैद' की कहानी 'मेरा दुश्मन' के नायक में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देखने को मिलता है।

भाषा के स्तर पर भी कहानी में सहज, सरल, स्पष्ट भाषा का प्रयोग किया गया है। तीव्र भावों के प्रस्फुटन के समय वाक्य भी छोटे हो गये हैं। विराम चिह्नों का उचित प्रयोग भी भाषा शैली को सुंदर बनाता है।

"बस एक बार यों कह दो तो मैं तुम्हारी हूँ, केवल तुम्हारी, एकमात्र तुम्हारी..."

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी नई कहानी की विशेषताओं को पूर्णतः धारण करती हुई शिल्प के स्तर पर भी नये प्रयोगों (यथा- डायरी शैली) को समाविष्ट करती है।

Copyright © Drishti The Vision Foundation